Subject Political Science

Date.. / /

MON TUE WED THR FRI SAT SUN

Abdul Qaish
Asstt. Prof. Pol. Sc.
Shershah college

हॉब्स का सामाजिक समझौता

राज्य की उत्पत्ति के सामाजिक समझौते सिद्धांत का पहला विचारक थामस हॉब्स है। हॉब्स के सामाजिक समझौता सिद्धांत को समझने के लिए सर्वप्रथम उसके मानव स्वभाव तथा प्राकृतिक अवस्था से संबंधित विचारों को समझना होगा। वह मानव स्वभाव का विश्लेषण करते हुए कहता है कि मनुष्य एक असामाजिक प्राणी है, वह निरंकुश, झगड़ालू, स्वार्थी तथा आत्मकेन्द्रित होता है। मनुष्य के भीतर अपार आकांक्षाएं होती हैं जिसके आधार पर वह किसी वस्तु के प्रति आकर्षित होता है या उससे घृणा करता है। इस संदर्भ में कोई भी वस्तु अच्छी या बुरी नहीं होती यह मानव स्वभाव में निहित आकांक्षाएं होती हैं जो अच्छे या बुरे के लिए उत्तरदायी होती हैं। इसी मानव स्वभाव के आधार पर हॉब्स एक प्राकृतिक अवस्था का चित्र निर्मित करता है। अपनी पुस्तक Leviathan में वह लिखता है कि प्रत्येक मनुष्य के स्वभाव में निहित स्वार्थपूर्ण आकांक्षाओं के कारण प्रत्येक मनुष्य अधिकतम लाभ प्राप्त करने का प्रयास करता है जिसके कारण प्राकृतिक अवस्था संघर्षमय हो गई थी। प्राकृतिक अवस्था निरंतर संघर्ष की अवस्था हो गई थी इसके तीन प्रमुख कारण थे पहला- प्रतिस्पर्धा, दूसरा पारस्परिक अविश्वास और तीसरा वैभव। प्रतिस्पर्धा के कारण वे लाभ के लिए, विश्वास के अभाव के कारण रक्षा के लिए तथा वैभव-प्राप्ति के कारण प्रसिद्धि के लिए परस्पर संघर्ष करते हैं। चूंकि प्राकृतिक अवस्था में मनुष्यों के परस्पर व्यवहार के नियमन के लिए कोई सत्ता नहीं थी जिसके कारण यह अवस्था निरंतर संघर्ष की अवस्था थी। ऐसी अवस्था में मनुष्य का जीवन दीन-हीन, मलिन, पाशविक तथा क्षणभंगुर था, कोई भी सुरक्षित नहीं था, कच्चे धागे से लटकती तलवार मृत्यु के रूप में सबके सिर पर मँडरा रही थी। प्रत्येक प्रकार के उद्योग-धंधे, कला एवं निर्माण का अभाव था। ऐसी परिस्थिति से बचने के लिए प्राकृतिक अवस्था में रहने वाले सभी मनुष्यों ने आपस में

Scanned with CamScanner

समझौता कर एक निरंकुश सत्ता की स्थापना की। तथा उसे अपने समस्त अधिकार सौंप दिये। समझौते के परिणामस्वरूप जो सत्ता अस्तित्व में आई वह पूर्ण रूप से निरंकुश एवं सर्वशक्तिमान थी। दूसरे यह समझौता प्राकृतिक अवस्था में रहने वाले मनुष्यों के बीच हुआ चूंकि अस्तित्व में आने वाली सत्ता समझौते का पक्ष न होने के कारण इसकी शर्तों से पूरी तरह मुक्त थी। मनुष्यों ने अपने सभी अधिकार इस सर्वोच्च सत्ता को सौंप दिया था उन्हे अब इस असीम निरंकुशता के अधीन ही अपना जीवन व्यतीत करना था। उनके पास समझौता समाप्त करने का विकल्प नही था अगर वे ऐसा करते हैं तो पुनः प्राकृतिक अवस्था में लौट जाएंगे।

प्राकृतिक अवस्था में रहने वाले लोग कुछ नियमों का पालन करते थे। ये नियम मनुष्य अपने अनुभव से सीखता है जो उसके जीवन के लिए लाभदायक थे। हॉब्स 19 प्रकार के नियमों का उल्लेख करता है जिन्हे वह Articles of Peace की संज्ञा देता है। इन नियमों मे तीन नियम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जो इस प्रकार हैं।

1.⇒ प्रत्येक मनुष्य को जहां तक संभव हो शांति का प्रयत्न करना चाहिए।

2:⇒ मनुष्यों को शांति स्थापना हेतु अपने प्राकृतिक अधिकारों को उस सीमा तक त्यागने के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए जहां तक और लोग भी इसके लिए प्रस्तुत हैं।

3:⇒ आपस में किये गये समझौते का हमेशा पालन करना चाहिए।

हॉब्स के सिद्धांत की आलोचना:⇒ 1⇒ मानव स्वभाव का विश्लेषण करते समय हॉब्स मानव के केवल नकारात्मक पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करता है जबकि मनुष्य में करुणा, दया, प्रेम, सहानुभूति जैसे सकारात्मक गुण भी पाये जाते है, हॉब्स जिनकी अनदेखी करता है। मनुष्य के भीतर संघर्ष के साथ-साथ सहयोग की प्रवृत्ति भी पायी जाती है।

2:⇒ जिस प्रकार की प्राकृतिक अवस्था का चित्रण हॉब्स प्रस्तुत करता है वह पूर्ण रूप से काल्पनिक तथा अनैतिहासिक है। इतिहास में इस तरह के साक्ष्य कहीं भी प्राप्त नही होते है।

Scanned with CamScanner

3:⇒ हॉब्स मानता है कि मनुष्य एक असामाजिक प्राणी है, उसे मनुष्यों की संगति से दुःख होता है, अगर इसे सत्य मान लिया जाए तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि उसके अंदर समझौता करने और समाज में रहने की प्रवृत्ति का उद्भव कैसे हुआ क्योंकि समझौता कर समाज में रहने की इच्छा सामाजिक भावना का प्रतिफल है।

4:⇒ हॉब्स राज्य और समाज की स्थापना हेतु डर को महत्वपूर्ण कारक मानता है वह लिखता है कि भय ही वह प्रेरक शक्ति है जो मनुष्यों को समझौते हेतु बाध्य करती है। लेकिन राज्य और समाज जैसी संस्थाओं का आधार केवल भय नहीं हो सकता बल्कि इसमें मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति का होना अत्यावश्यक है।

Scanned with CamScanner